❶ ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वेद परिवार निर्माण अभियान
50 मंत्र - 1 परिवार
वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान में भाग लेने हेतु
9810936570 या 9911140756 पर व्हाट्सएप्प करें

वर्ष 47, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 सितम्बर, 2024 से रविवार 8 सितम्बर, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक : आवश्यक प्रस्ताव पारित एवं लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

आर्यसमाज के सेवा प्रकल्पों को और अधिक गति देने के लिए मासिक सहयोग की अपील

अपनी-अपनी आर्यसमाजों के रविवारीय सत्संग में सपरिवार पहुंचे आर्यजन

200वीं जयन्ती एवं 150वें स्थापना दिवस पर जनसम्पर्क अभियान का आह्वान

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के विकास और विस्तार के लिए प्रयासरत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा की बैठक रविवार 1 सितम्बर 2024 को आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय

धर्मार्य सभा एवं गौकृष्यादि रक्षिणी सभा का गठन होगा

आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी, महामंत्री श्री सतीश चड्डा जी, सभा के उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, सभा के लगभग समस्त मंत्री एवं वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी, आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री और आमंत्रित सदस्य उपस्थित थे। गायत्री मंत्र और ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना मंत्रों से के उच्चारण से बैठक का आरंभ हुआ। सभा महामंत्री जी ने गत बैठक के उपरांत आर्य समाज परिवार की दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए दो मिनट का मौन रखकर उपस्थित महानुभावों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। महामंत्री जी ने गत बैठक का पूरा विवरण पढ़कर सुनाया, जिसका सभी ने हाथ उठाकर समर्थन किया। इसके उपरांत पूर्व समय में सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में जंतर-मंतर पर रोष प्रदर्शन और अन्य प्रेरक कार्यक्रमों की विधिवत समीक्षा की और उपरोक्त सभी कार्यक्रमों की सफलता और प्रेरणा के लिए सभी अधिकारी सदस्यों ने अत्यंत उमंग उत्साह और उल्लास पूर्वक समर्थन किया तथा पुष्टि की।

सभा महामंत्री जी ने सभा द्वारा चल रहे सेवा प्रकल्पों के विषय में जानकारी देते हुए बताया की वर्तमान में 110 से अधिक सेवा प्रकल्प गतिशील हैं जिनके अंतर्गत आर्य प्रगति स्कॉलरशिप और आर्य प्रतिभा विकास संस्थान लगातार सफलता की राह पर अग्रसर हैं।

सभा मंत्री श्री वीरेंद्र सरदाना जी ने बताया कि पिछले वर्ष लगभग 46 लाख की छात्रवृत्ति वितरित की गई थी और इस वर्ष लगभग 78 लाख की राशि वितरण करने का विचार है। - शेष पृष्ठ 4 पर

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Web : www.thearyasamaj.org
ओ३म्
२३३६०१५०
२३३६५६५६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
The Delhi Arya Pratinidhi Sabha
१५—हनुमान् रोड, नई दिल्ली — ११०००१

क्रमांक :.............................. दिनांक : 2 सितम्बर, 2024

वक्फ (संशोधन) बिल 2024 के समर्थन में सुझाव भेजें

वक्फ (संशोधन) विधेयक 2024 पर चर्चा के लिए भारतीय संसद द्वारा गठित संयुक्त संसदीय समीति (JPC) द्वारा आम जनता एवं संस्थाओं से विचार एवं सुझाव मांगे गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अन्तरंग बैठक 1 सितम्बर, 2024 में निर्णय लिया गया है कि अधिक से अधिक आर्य संस्थाएं, भारतीय संसद द्वारा गठित संयुक्त संसदीय समीति (JPC) को भेजे गए वक्फ (संशोधन) विधेयक 2024 के समर्थन में अपने विचार एवं सुझाव भेजें।

अत: सभी आर्य समाज मंदिर, गुरुकुल, विद्यालय, आर्य वीर/वीरांगना दल आदि आर्य संस्थाएं अपने-अपने लैटरपैड पर वक्फ (संशोधन) विधेयक 2024, जो भारतीय संसद ने JPC को भेजा है, उसे यथावत पारित कर अधिनियम बनाने या वक्फ बोर्ड को पुर्णत: समाप्त करने के लिए अपने पत्र भेजें।

14 सितम्बर 2024 तक पहुँचने वाले पत्रों को ही संज्ञान में लिया जायेगा। अत: अपने पत्र शीघ्र ही मेल से **jpcwaqf-lss@sansad.nic.in** पर भेज देवें।

(धर्मपाल आर्य)
प्रधान

(विनय आर्य)
महामंत्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना के दो वर्षीय आयोजनों हेतु गठित

ज्ञान-ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के अंतर्गत आर्य समाज फाऊंडेशन चेन्नई द्वारा

वैदिक विद्या केंद्र, पुदुचेरी (पाण्डिचेरी) का उदघाटन समारोह

रविवार 15 सितम्बर, 2024 : समस्त आर्यजन परिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

प्रकृति के आंगन में निर्मित आर्य समाज के इस भव्य केन्द्र में वर्ष भर निरन्तर होंगे प्रेरक कार्यक्रमों के आयोजन

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर सम्पूर्ण आर्य जगत में प्रचार-प्रसार और विस्तार की निरन्तर धूम मची हुई है। भारत के कोने-कोने में और संपूर्ण विश्व के अंदर अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण है। जगह-जगह बड़े, बड़े जन कल्याणकारी आयोजन सम्पन्न हो रहे हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, मानव सेवा के अभियान सफलता पूर्वक चलाए जा रहे हैं और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं, आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं, परम्पराओ को जन-जन तक पहुंचाने के लिए नए-नए विशाल केंद्र निर्मित हो रहे हैं।

इस क्रम में आर्य समाज फाऊंडेशन चेन्नई द्वारा वैदिक विद्या केंद्र, जो कि चेन्नई से 40 किलोमीटर आगे प्रकृति के सुरम्य वातावरण पांडिचेरी में आर्य समाज के वैदिक विद्या केंद्र का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ है। आर्य समाज का यह केंद्र पूरी तरह से आधुनिक संसाधनों और सुविधाओं से परिपूर्ण है। यहां प्रकृति के आंगन में वैदिक विधाओं का गहन अध्ययन करने हेतु, ध्यान, साधना, सत्संग, सेवा और समर्पण के भाव से साधक अपने जीवन को गरिमा प्रदान करने के लिए आवासीय सुविधाओं का आनंद ले सकते हैं। - शेष पृष्ठ 7 पर

पुदुचेरी में नवनिर्मित आर्य विद्या केन्द्र के विशाल भवन का एक दृश्य

देववाणी-संस्कृत

हमारे अन्तःकरण में सोम सरोवर बहने लगे

वेद-स्वाध्याय

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः। सुमृळीको न आ विश।।
-ऋ० 1। 91। 11
ऋषिः- राहूगणपुत्रो गोतमः।। देवता - सोमः।। छन्दः- निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थ- सोम = हे सोमदेव! **वयं वचोविदः** = वाणी के वेत्ता हम लोग **त्वा** = तुझे **गीर्भिः** = अपनी वाणियों द्वारा **वर्धयामः** = बढ़ाते हैं। **सुमृळीकः** = उत्तम सुख देनेवाले होते हुए तुम **नःआविश** = हममें प्रविष्ट हो जाओ।

विनय- हे प्रशान्तस्वरूप सोमदेव! तुम सब जगत् के सार हो, जीवन-रस हो, फिर भी प्रकृति के विषयों में फँसा हुआ मनुष्य-संसार तुम्हें नहीं जानता; तुम कुछ हो यह कभी अनुभव ही नहीं करता, परन्तु हम लोग जिन्होंने तुम्हारी दया से तुम्हारी थोड़ी-बहुत अनुभूति का सुख पाया है, अपना यही कार्य समझते हैं कि पागलों की तरह सब जगह तुम्हारे गुण गाते फिरें-गाते फिरा करें। तुम्हारी भक्ति ने ही हमें ''वचोविद्'' भी बना दिया है - तुम्हारी भक्ति से हम वाणी की शक्ति को, रहस्य को जान गये हैं और इस शक्ति का प्रयोग करना भी जान गये हैं, अतः अपनी वाणियों से हम सदा तुम्हारा कीर्त्तन करते हैं, तुम्हारा यश गाते हैं, तुम्हारे स्वरूप का वर्णन करते हैं। जहाँ विषयग्रस्त मानवी हृदयों ने तुम्हें निकाल रखा है या जहाँ प्रकृतिवाद ने तुम्हारे लिए जगह नहीं रखी है, वहाँ भी तुम्हारा नाम फैलाते हैं, तुम्हें पहुँचाते हैं। मानो तुम्हारे सैनिक बनकर सांसारिक दृष्टि से तुम्हारा राज्य बढ़ाने का यत्न करते हैं, परन्तु हे देव! तुम इतना करो कि सात्त्विक सुख के दाता होते हुए सदा हमारे अन्दर प्रविष्ट रहो, बस हम यही चाहते हैं। हम तुच्छ लोग तुझे कहाँ से बढ़ा सकते हैं! हम तुझे फैलाते हैं, तुम्हारा राज्य फैलाते हैं- यह कहना कितनी धृष्टता का वचन है। हे सर्वशक्तिमान् ! हे अनन्त, अपार! वास्तव में तुम्हीं जितना हमारे अन्दर प्रविष्ट होते हो उतना ही हममें तुम्हारा अवर्णनीय सात्त्विक सुख अनुभूत होता है और उस आनन्द में मस्त होकर हम तुम्हारे गुण गाते फिरते हैं। तब हमारे एक-एक अङ्ग से, हमारी एक-एक चेष्टा से, तुम्हारा प्रकाश होता है, अतः हमारी प्रार्थना तो यही है कि तुम हमारे अन्दर प्रविष्ट हो जाओ, तुम हममें आविष्ट हो जाओ। जितनी मात्रा में तुम हमसें प्रवष्टि होओगे, उतनी ही मात्रा में हमारे द्वारा जगत् प्रचार व प्रकाश होगा। हे प्रभो! इस सात्त्विक सुख से हमें अनुप्राणित करते हुए हममें आविष्ट हो जाओ।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या कानून की आड़ में फैल रहा है वक्फ बोर्ड का अवैध धंधा?

हाल ही में आम आदमी पार्टी के ओखला से विधायक अमानतुल्लाह खान को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गिरफ्तार कर लिया है। जांच एजेंसियों ने दावा किया है कि अमानतुल्लाह ने दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष पद पर रहते कई काली कमाई की है। इस अवैध कमाई का इस्तेमाल अपने करीबियों के जरिए रियल एस्टेट में किया। ईडी का दूसरा आरोप है कि अध्यक्ष रहते अमानतुल्लाह ने 100 करोड़ रुपये की वक्फ संपत्तियों को अवैध रूप से लीज पर दिया और वक्फ बोर्ड में 32 संविदा कर्मचारियों को नियुक्त किया। साथ ही जांच एजेंसियों ने अमानतुल्लाह पर वक्फ के फंड का गलत इस्तेमाल करने का भी आरोप लगाया है। दूसरी ओर, वक्फ संशोधन बिल को सशक्त बनाने के लिए सरकार की ओर से कवायद जारी है। इसी क्रम में अल्पसंख्यक समुदाय से सुझाव मांगे गए हैं। वहीं, जेपीसी की बैठक में विपक्षी सांसदों ने इस बिल का विरोध भी किया है।

.....आम आदमी पार्टी के ओखला से विधायक अमानतुल्लाह खान को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गिरफ्तार कर लिया है। जांच एजेंसियों ने दावा किया है कि अमानतुल्लाह ने दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष पद पर रहते कई काली कमाई की है। इस अवैध कमाई का इस्तेमाल अपने करीबियों के जरिए रियल एस्टेट में किया। ईडी का दूसरा आरोप है कि अध्यक्ष रहते अमानतुल्लाह ने 100 करोड़ रुपये की वक्फ संपत्तियों को अवैध रूप से लीज पर दिया और वक्फ बोर्ड में 32 संविदा कर्मचारियों को नियुक्त किया। साथ ही जांच एजेंसियों ने अमानतुल्लाह पर वक्फ के फंड का गलत इस्तेमाल करने का भी आरोप लगाया है। दूसरी ओर, वक्फ संशोधन बिल को सशक्त बनाने के लिए सरकार की ओर से कवायद जारी है। इसी क्रम में अल्पसंख्यक समुदाय से सुझाव मांगे गए हैं। वहीं, जेपीसी की बैठक में विपक्षी सांसदों ने इस बिल का विरोध भी किया है।......

ऐसे में सवाल बन जाता है कि भारत में सरकार और भारतीय सेना के बाद जमीन का तीसरा सबसे बड़ा मालिक वक्फ बोर्ड कैसे बना? दरअसल, मामले को एक-एक करके समझिए। थोड़े समय पहले दिल्ली के महरौली क्षेत्र का मामला सामने आया था। यहां के वार्ड नं. 8 में एक भूखंड किसी भार्गव नाम के व्यक्ति का है, जिसकी कीमत करोड़ों रुपये में है। उन्होंने 1987-88 में इस भूखंड को एक मुसलमान से खरीदा था। कुछ समय पहले भूखंड की घेराबंदी की जाने लगी तो दिल्ली वक्फ बोर्ड के तत्कालीन अध्यक्ष और आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान ने उस भूखंड के बीच में मौजूद एक पुराने ढांचे को मजहबी स्थल बताना शुरू किया और कई बार जबरन उस पर कब्जा करने का भी प्रयास किया। मुसलमानों की भीड़ के साथ खूब हंगामा किया। अभी यह मामला दिल्ली उच्च न्यायालय में लंबित है।

दूसरा एक मामला सितंबर 2022 का है, जब तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली गाँव का एक गरीब किसान राजगोपाल बेटी की शादी के लिए अपनी जमीन बेचने के मामले में तहसील गया था। वहां जाकर उसे पता चला कि यह जमीन उसकी नहीं है, बल्कि गांव की पूरी जमीन पर वक्फ बोर्ड का कब्जा है। विडंबना ये देखिए कि गाँव में 1500 साल पुराना मंदिर और उसकी भी जमीन है, लेकिन इस जमीन पर भी वक्फ बोर्ड का दावा है कि जमीन वक्फ की है। जब मामला उछला तो पता चला कि ये सिर्फ एक गांव का मामला नहीं है, बल्कि अकेले त्रिची जिले में कम से कम 6 ऐसे गांव हैं, जिन्हें वक्फ बोर्ड ने अपनी संपत्ति घोषित किया हुआ है।

इससे पहले 28 दिसम्बर 2021 को एक मामला उछला था जब भगवान श्रीकृष्ण की नगरी द्वारिका की भूमि पर वक्फ बोर्ड की दावेदारी हुई । तब प्रतिदावों के बीच राज्यसभा सदस्य परिमल नथवानी ने बोर्ड के दावे पर आश्चर्य जताया था कि आखिर कृष्ण नगरी में वक्फ बोर्ड जमीन पर मालिकाना दावा कैसे कर सकता है? इसी तरह दिन-पर-दिन वक्फ की जमीन बढ़ती गई और तीन दिल्ली जितना क्षेत्रफल वक्फ ने कब्जा लिया। सवाल बना बंटवारे के बाद देश में जमीन उतनी ही है, जितनी पहले थी। फिर वक्फ बोर्ड की जमीन कैसे बढ़ रही है? अगर पिछले 7 साल का अनुमानित आंकड़ा लें, तो देश भर में करीब 2 लाख नई मजारें पैदा हो गईं। कारण एक मुसलमान सड़क के किनारे किसी सरकारी या निजी जमीन पर कहीं कोई मस्जिद या मजार बनाकर बैठ जाए तो वह कुछ समय बाद वह जगह वैध हो ही जाती है। ऐसा वक्फ कानून-1995 के 2013 के संशोधन के कारण हो रहा है। इसलिए कोई मुसलमान कहीं भी अवैध मजार या मस्जिद बना लेता है और एक अर्जी वक्फ बोर्ड में लगा देता है। बाकी काम वक्फ बोर्ड करता है। यही कारण है कि आज पूरे भारत में अवैध मस्जिदों और मजारों का निर्माण बेरोकटोक हो रहा है।

पिछले दो सालों में देश के अलग-अलग उच्च न्यायालयों में वक्फ से जुड़ी करीब 120 याचिकाएं दायर की गई थी। ये याचिका कैसी थी, आप समझ लीजिए कि जुलाई 2022 में खबर आ थी कि उत्तर प्रदेश शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड की मिलीभगत से लखनऊ के एक शिवालय को वक्फ संपत्ति के रूप में दर्ज करवा दिया गया था। जबकि 1862 के राजस्व रिकॉर्ड में हिंदू शिवालय दर्ज है, और ये वक्फ बोर्ड 1908 में बना था, लेकिन फिर भी जमीन वक्फ की हो गई ।

मई 2020 में जिंदल ग्रुप की एकल खनन साइट पर मस्जिद नुमा एक छोटी सी दीवार बनाकर राजस्थान वक्फ बोर्ड ने ये कहकर अपना हक जताया था कि ये जमीन वक्फ बोर्ड की है। मामला जब जस्टिस हेमंत गुप्ता और जस्टिस वी रामसुब्रमण्यम की खंडपीठ के सामने पहुंचा, तो सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने कहा कि एक जर्जर दीवार को नमाज अदा करने के इरादे से मजहबी स्थान (मस्जिद) का दर्जा नहीं दिया जा सकता है।

अब इसमें भी दो बोर्ड हैं, सुन्नी वक्फ बोर्ड की सम्पत्ति अलग है और शिया वक्फ बोर्ड की अलग। शायद वोट बैंक की राजनीति ने वक्फ बोर्ड को इतनी ताकत मिली कि वह जमीन हथियाने का एक उपकरण बन गया। साल 2013 में तत्कालीन मनमोहन सरकार ने वक्फ कानून-1995 में संशोधन कर उसे ऐसे अधिकार दे दिए कि किसी भी संपत्ति को वक्फ संपत्ति घोषित करने से पहले उसके मालिक को सूचित करना जरूरी नहीं है। यानी यह मानकर चलिए कि कोई आपके चबूतरे पर मजाक में भी चुपके से 786 लिख गया और वक्फ ने उसे संपत्ति घोषित कर दिया, तो जमीन वक्फ की। यानी अगर बोर्ड किसी संपत्ति को मुस्लिम कानून के अनुसार पाक मजहबी मान ले, तो वह संपत्ति वक्फ बोर्ड की हो जाएगी। अब अगर किसी को बोर्ड के इस फैसले से ऐतराज है, तो वह वक्फ से गुहार लगा सकता है। वक्फ एक्ट 1995 के आर्टिकल 40 के अनुसार यह जमीन किसकी है, यह वक्फ का सर्वेयर और वक्फ बोर्ड ही तय करेगा। शायद इसी कारण अब ये लोग इस विशेष षड्यंत्र के ऐतिहासिक इमारतों और भवनों के आसपास नमाज पढ़ने लगे हैं। कभी किसी पार्क में, कभी

- शेष पृष्ठ 7 पर

आइये! विचारें-कैसे होगा-विश्व का कायाकल्प?

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

.......आर्यसमाज ने राष्ट्रभाषा हिन्दी, संस्कृत, वेशभूषा तथा अन्य राष्ट्रीय विचारधाराओं के सम्बन्ध में जो कार्य किया वह अतुलनीय है, परन्तु उसकी उपेक्षा करके कुछ लेखक अन्यथा कहते रहते हैं, इसका कारण क्या है? विचारने पर यही ज्ञात होता है कि आर्यसमाज में परस्पर कलह का वातावरण बना हुआ है। यदि वह दूर हो जाए तो आर्यसमाज का ही कायाकल्प नहीं, अपितु सारे विश्व का कायाकल्प हो जाएगा और ऋषि दयानन्द का "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का स्वप्न साकार होगा। "पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः", "अन्योऽन्यमभिहर्यत" की भावना से ओतप्रोत होकर विश्व एकसूत्र में बँधेगा। सर्वत्र सुख-समृद्धि का साम्राज्य होगा।....

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की यह उत्कट इच्छा रहती है कि जन-जागरण हो, राष्ट्र-जागरण हो, जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों से अधिक अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान दे। इसके लिए राष्ट्रवाद के महान् उद्घोषक स्वामी दयानन्द सरस्वती की द्विजन्म-शताब्दी, आर्यसमाज की स्थापना के 150 वर्ष तथा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान-शताब्दी को समारोह-पूर्वक मनाने को माध्यम बनाकर सर्वत्र राष्ट्रीय जागरण का कार्यक्रम हो, ऐसा प्रयास करने का विचारा। जिससे राष्ट्र की परिभाषा वास्तव में भूखण्ड मात्र नहीं, अपितु भाषा, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, परम्परा - इनकी सुरक्षा के प्रति जन-जन के अन्दर भावना जागृत हो। उनकी इस योजना के कारण स्थान-स्थान पर आर्यसमाज के द्वारा कार्यक्रम हो रहे हैं। साहित्य के अतिरिक्त अन्य प्रचार के कार्यक्रमों को अपनाया जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं में आर्यसमाज के उज्ज्वल अतीत का साकल्येन यशोगान होता है। यह उचित ही है क्योंकि जब तक अपने गौरवमय अतीत का बोध न हो, तब तक मनुष्य आगे कैसे बढ़ेगा? क्योंकि इतिहास हमें यह बताता है कि अतीत में हम किस प्रकार आगे बढ़े? तथा अतीत की त्रुटियों को स्मरण करते हुए उनका परिमार्जन करने की प्रेरणा प्राप्त होती है, किन्तु जिन कारणों से आर्यसमाज '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम**' के लक्ष्य तक नहीं पहुंच पा रहा है, उन कारणों पर ध्यान अत्यल्प गया है। उन कारणों को दूर करने के लिए ही स्वामी श्रद्धानन्द आदि मनीषियों ने सन् 1909 में सार्वदेशिक सभा का निर्माण किया तथा उस समय के संचालित सभी गुरुकुल एकसूत्र में बँधें ऐसा करने का प्रयास किया, किन्तु अहम्मन्यता एवं व्यक्तिगत संस्थावाद के भाव के कारण परस्पर में आरोप-प्रत्यारोप, यहाँ तक कि न्यायालयों में अभियोग तक किये गए। इस दुरवस्था को दूर करने के लिए कुछ आर्य सज्जनों ने पुनः विचार किया और दशम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन सन् 1968 में हैदराबाद में जो मनाया जा रहा था, उसमें मंच पर ही यह प्रस्ताव रखा गया कि आर्यसमाज में परस्पर अभियोगवादी वृत्ति समाप्त हो और सभी अपने अभियोगों को वापस ले लें। इस कार्य के लिए आनन्द स्वामी जी को अध्यक्ष बनाया गया और उनके निर्देशन में इस एकतापूर्ण कार्य के शुभारम्भ का प्रस्ताव रखा गया, किन्तु प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं हो सका, कारण वही था। अहम्मन्यता एवं व्यक्तिगत स्वार्थवाद। इसके पश्चात् पुनः प्रयास किया गया और स्वामी सुमेधानन्द जी चम्पा वाले के साथ तीन व्यक्तियों की एक समिति का प्रस्ताव बनाकर घोषित किया गया कि ये समिति जो निर्णय लेगी, वह आर्यसमाज के कलह-निवारण में कृतकार्य होगी। किन्तु यहाँ भी निहित-स्वार्थों के कारण कुछ अधिकारियों ने इसके निर्णय को मानने में इस समिति को ही नहीं स्वीकार किया और मामला अधर में लम्बित हो गया।

आज ऋषि दयानन्द की द्विजन्म-शताब्दी के अवसर पर आर्यसमाज के उत्थान के लिए विविध प्रकार की योजनाओं का प्रस्ताव आता है तथा भूत का गुणगान करते हुए अनेक घोषणाएँ होती हैं। आर्य समाज के परस्पर-कलह को दूर करने के लिए मथुरा में 1924-25 में ऋषि दयानन्द की जन्मशताब्दी मनाने का दृढ़ निश्चय किया गया। आर्यों में अति उत्साह था और उसकी पूर्णता के लिए अतिवेग से कार्य प्रारम्भ हुए। इसको देखकर मो.क.गांधी ने, जो अंग्रेजों के प्रच्छन्न क्रीतदास थे, अपनी प्रसिद्ध पत्रिका 'यंग इण्डिया' में 28 मई 1924 को एक लेख लिखा, जिसमें आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के कार्यों की कटु आलोचना करते हुए यहाँ तक लिखा कि "मैंने सत्यार्थप्रकाश से अधिक निराशाजनक और को पुस्तक नहीं पढ़ी" इत्यादि। यह ईसाई व इस्लाम के लोगों को संतुष्ट करने के लिए तथा अपने पौराणिक जगत् को भड़काने के लिए किया था, जिसका उत्तर चमूपति जी ने 'आर्य पत्रिका' में अच्छी प्रकार से दिया था। इस कारण मो.क.गांधी अपनी योजना में सफल नहीं हुए और शताब्दी धूमधाम से मनाई गई, किन्तु एक काम अधूरा रह गया और वह यह कि सम्पूर्ण आर्यजगत् में एकता नहीं बन पायी।

पुनः 1938-39 में हैदराबाद-सत्याग्रह - आन्दोलन निजाम के अत्याचारों से पीड़ित होने के कारण उसके प्रतीकार के लिए प्रारम्भ किया गया। इस आन्दोलन को रोकने के लिए मो.क.गांधी ने वरिष्ठ आर्यसमाजी नेता घनश्याम गुप्त को भेजा, किन्तु वहाँ भी वीर सावरकर के प्रोत्साहन के कारण घनश्याम गुप्त मुँह लटकाए वापस लौट आए और आन्दोलन तीव्रगति से चल पड़ा, जिसमें हिन्दू महासभा सहित सभी संगठनों ने आर्यसमाज को सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया। मो.क.गांधी से यह सहन नहीं हुआ और उन्होंने कहा कि यह सत्याग्रह हिन्दू महासभा के सम्मिलित होने के कारण अब साम्प्रदायिक हो गया है, किन्तु उनके इस कुटिल चाल से भी आन्दोलन प्रभावित नहीं हुआ और तानाशाह निजाम को झुकना पड़ा तथा सत्याग्रह पूर्ण सफल रहा।

आर्यसमाज ने राष्ट्रभाषा हिन्दी, संस्कृत, वेशभूषा तथा अन्य राष्ट्रीय विचारधाराओं के सम्बन्ध में जो कार्य किया वह अतुलनीय है, परन्तु उसकी उपेक्षा करके कुछ लेखक अन्यथा कहते रहते हैं, इसका कारण क्या है? विचारने पर यही ज्ञात होता है कि आर्यसमाज में परस्पर कलह का वातावरण बना हुआ है। यदि वह दूर हो जाए तो आर्यसमाज का ही कायाकल्प नहीं, अपितु सारे विश्व का कायाकल्प हो जाएगा और ऋषि दयानन्द का "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम**" का स्वप्न साकार होगा। "पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः", "**अन्योऽन्यमभिहर्यत**" की भावना से ओतप्रोत होकर विश्व एकसूत्र में बँधेगा। सर्वत्र सुख-समृद्धि का साम्राज्य होगा। देखते हैं वह दिन कब आता है और आर्यजनता कब अपने नेताओं के स्वार्थ के चंगुल से छूटकर आगे बढ़ती है?

। अस्माकं वीराः उत्तरे भवन्तुम ।

।। वैदिकधर्मो विजयतेतराम्म्।।

- कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ.प्र.)

स्वास्थ रक्षा

कब्ज और जल चिकित्सा

कब्ज और जल चिकित्सा

जल चिकित्सा पद्धति का वेदों में वर्णन किया है। जिनकी निरन्तर खोज का परिणाम ही आधुनिक युग की प्राकृतिक चिकित्सा है। वेद में जल के प्रयोग, स्नान इत्यादि का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिश्रवन्तु नः। (अथर्व. 1/6/1)

अर्थात् कल्याण कारक जल, दिव्यगुणों से युक्त हमारी अभीष्ट सिद्धि के लिए, पान एवं रक्षा के लिए सुखदायक होवे और हमारे रोग की शान्ति के लिए और भय दूर करने के लिए, हमारे लिए सब ओर से सुख की वर्षा करें।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन, महे रणाय चक्षसे।। (अथर्व. 1/5/1)

अर्थात् जल निश्चय करके हम सबके लिए सुख कारक होता है, उससे बड़े पराक्रम और दर्शन की शक्ति उत्पन्न हो सकती है।

वेद का निम्नलिखित मंत्र तो प्रत्येक रोग में जल प्रयोग का मूलभूत प्रमाण है।

अपस्तवन्तरमृतमरसु भेषजम्। अपामुत प्रशस्तिभिरश्वाभवथ वाजिनी गावो भवथ वाजिनीः।(अथर्व. 1/4/4)

अर्थात् जल एक सर्वोत्तम औषधि है, जल में रोगनिवारक अमृतरस है यह भय जीतने वाला है।

इस संसार में कोई भी मनुष्य अस्वस्थ एवं दुःखी नहीं रहना चाहता। प्रत्येक मनुष्य उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हैं। किंतु अनुचित आहार गलत जीवनशैली और पर्यावरण प्रदूषण आदि के कारण आज उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करना एक कठिन चुनौति है। ऐसे में वेदज्ञान के माध्यम से प्रचलित जल चिकित्सा एक विशिष्टि पद्धति के विषय में यहां प्रस्तुत है स्वास्थ्य रक्षा के कुछ उपयोगी अनुभवी सूत्र संदेश-

कब्ज और जल चिकित्सा

जल चिकित्सा पद्धति का वेदों में वर्णन किया है। जिनकी निरन्तर खोज का परिणाम ही आधुनिक युग की प्राकृतिक चिकित्सा है। वैदिक ग्रन्थों में जल के प्रयोग, स्नान इत्यादि का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिश्रवन्तुनः

(अथर्व. 1 सू. 6 मं. 1)

अर्थात् कल्याण कारक जल, दिव्यगुणों से युक्त हमारी अभीष्ट सिद्धि के लिए, पान एवं रक्षा के लिए सुखदायक होवे और हमारे रोग की शान्ति के लिए और भय दूर करने के लिए, हमारे लिए सब ओर से सुख की वर्षा करें।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन, महे रणाय चक्षसे।।

(अथर्व. 1, सूं. 5, मं. 1)

अर्थात् जल निश्चय करके हम सबके लिए सुख कारक होता है, उससे बड़े पराक्रम और दर्शन की शक्ति उत्पन्न हो सकती है।

वेद का निम्नलिखित मंत्र तो प्रत्येक रोग में जल प्रयोग का मूलभूत प्रमाण है।

अपस्तवन्तरमृतमरसु भेषजम्।
अपामुत प्रशस्तिभिरश्वाभवथ
वाजिनी गावो भवथ वाजिनीः।

(अथर्व. 1 सू. 4 मं. 4)

अर्थात् जल एक सर्वोत्तम औषधि है, जल में रोगनिवारक अमृतरस है यह भय जीतने वाला है।

इसी प्रकार कब्ज, मंदाग्नि और दस्तों के अनेक रोगों पर मंत्र दिए गए हैं जैसे-

इन सब प्रमाणों से हमें यह जान लेना चाहिए कि जल चिकित्सा वेदकाल से ही चल रही है। आज प्राकृतिक चिकित्सा में जितने स्नान बताए गए हैं वे सब स्नान वेद में वर्णित हैं। इसलिए सभी पाठकों को इनसे लाभ उठाना चाहिए।

जर्मनी के अन्तर्गत लिपजिंग नगर के "मिस्टर लूईकूने" ने जलचिकित्सा से प्रभावित होकर एक ग्रन्थ की रचना ही कर डाली। जो कि भारतवर्ष में जल चिकित्सा के नाम से प्रसिद्ध है। वे आयु पर्यन्त इसके भक्त बने रहे। उनकी कहानी

-शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

इस पर सुरेश चंद्र गुप्ता जी, श्रीमती प्रतिभा लूथरा जी और कई महानुभावों ने अपने विचार भी प्रस्तुत किये, जिनके विचारों को नोट किया गया और उन पर चिंतन करने की बात कही गई ।

विनय आर्य जी ने उपस्थित अधिकारियों को गुरुकुल कांगड़ी के विषय में वर्तमान स्थिति से अवगत कराया और कोर्ट में चल रहे केस के विषय में भी जानकारी दी।

200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर जनसंपर्क अभियान के विषय पर आह्वान किया गया। आर्य समाजों में साप्ताहिक सत्संगों में महीने के एक रविवार को सभी आर्य परिवार अपने बच्चों सहित सत्संग में अवश्य उपस्थित हो और अपने क्षेत्र के वरिष्ठ और विशिष्ट लोगों को जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, विधायक, निगम पार्षद और अन्य स्कूलों के प्रिंसिपल आदि को समाज में बुलाएं और उन्हें आर्य समाज के साथ जोड़ने का प्रयास करें। इसके साथ ही अपने आर्य समाजी होने की पहचान के लिए दरवाजों पर नमस्ते का स्टीकर, घर की छत पर ओम का ध्वज, अपनी गाड़ियों पर स्टीकर, घर में वेद,उपनिषद और सत्यार्थ प्रकाश आदि महर्षि के अमर ग्रंथ, हवन कुंड आदि सारी चीजें जो एक आर्य समाजी की पहचान हैं, वह अवश्य ही होनी चाहिए, इसका सभी ने स्वागत किया। इस क्रम में पूरे दिन की एक गोष्ठी करने की भी घोषणा की गई, जिसमें दिल्ली की सभी आर्य समाजों के प्रधान और मंत्री एक साथ बैठकर सुबह से लेकर शाम तक चिंतन करेंगे, इसका सभी ने समर्थन किया और जल्दी ही तिथि निश्चित की जाएगी, यह घोषणा की गई।

गुरुकुल कांगड़ी के विषय में संक्षिप्त जानकारी देते हुए श्री विनय आर्य जी ने बताया की स्वामी श्रद्धानंद जी ने पुरुषों के लिए गुरुकुल कांगड़ी और कन्याओं के लिए देहरादून में कन्या गुरुकुल की स्थापना की थी। लेकिन वर्तमान में वहां सह शिक्षा की बात चल रही है, जो कि आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं के विरुद्ध है, स्वामी श्रद्धानंद जी भी यह नहीं चाहते होंगे इसलिए तो उन्होंने दोनों वर्गों की व्यवस्था अलग अलग की थी। इसलिए हम उसका विरोध लगातार कर रहे हैं और इसके लिए हमें प्रदर्शन भी करना पड़ सकता है, विभिन्न आर्य समाजों के लिए तदर्थ समिति के पुनर्गठन-विस्तार का अधिकार सभा प्रधान जी को दिया गया, कुछ समाजें ऐसी हैं जहां पर कोई सदस्य नहीं रह गया है। उनके संबंध में भी तदर्थ समिति बनाने का प्रस्ताव पास किया गया। आर्य समाज के विस्तार के लिए धर्मार्य और गोकृष्यादि रक्षिणी सभा के गठन का प्रस्ताव पास किया गया।

भारत सरकार द्वारा वक्फ बोर्ड के नए कानून का समर्थन करने के लिए समस्त आर्य जगत से अनुरोध किया गया कि सभी अपनी ओर से जेपीसी को पत्र भेजें, जिसमें नए बिल का आर्य समाज समर्थन करता है का भाव हो। इसके लिए सभी आर्य समाजआर्य संस्थाएं अपनी-अपनी तरफ से पत्र अवश्य भेजें। जिसका प्रभाव बहुत बड़ा सकारात्मक पड़ेगा, इस प्रस्ताव को सभी ने स्वीकार किया। बैठक के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश आर्य जी ने सभी अधिकारियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आप सब समय पर उपस्थित हुए इसके लिए आपका आभार धन्यवाद। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित आर्य समाज के अधिकारियों का आभार करते हुए, अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि आप सभी का यहां पर आना अत्यंत सार्थक है, आप सभी समय-समय पर बैठकों में आते हैं और आपको यहां पर पता चलता है कि सभा किस तरह से कार्य कर रही है, किन परिस्थितियों में कार्य कर रही है और किस तरह से आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। पंचकुला में भी एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट चल रहा है और वहां का निर्माण कार्य अपने आप में अद्भुत है, आप सभी अपना समय निकाल करके आए इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

पुस्तक परिचय

इतिहास अपने आपमें उस कठोर पत्थर की भांति है जिसके ऊपर चाहे जितनी धूल पड़ती रहे, जमती रहे, वह दिखना बन्द हो जाए, उसकी कल्पना भी कोई न कर सके कि इस मिट्टी के नीचे कोई पत्थर होगा। पर जब कोई खोजी, यह जानकर कि यहां एक मजबूत चट्टान थी और उस धूल-मिट्टी के ढेर को हटाना शुरु करेगा तो एक समय ऐसा अवश्य आएगा कि वह धूल- मिट्टी हटाकर उस चट्टान को खोज लेगा। काले बादलों के आ जाने पर सूरज की रोशनी कुछ समय के लिए कम हो जाती है, पर समाप्त नहीं होती। ठीक वही स्थिति ऋषि दयानन्द के जीवन, उनके कार्यों और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों को लेकर भी रही। इतिहास लेखकों द्वारा या खासकर पाठ्य पुस्तकों में उनके जीवन-कार्यों को जिस तरह सम्मान/ स्थान दिया जाना चाहिए था, वह कभी नहीं मिल पाया, जिसके चलते एक बड़ा वर्ग उस जानकारी से वंचित रहा और एक वर्ग ने उनकी कुछ बातों को नकारात्मक रूप में बताने के लिए भरपूर प्रयत्न किया, परन्तु उन जैसे महान् तेजस्वी व्यक्तित्व का जिस प्रकार से परिचय समस्त मानव जाति के कल्याणार्थ होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। उनके शिष्यों ने अपनी पूरी शक्ति उनके आदेशानुसार किए जाने वाले कार्यों में झोंकी, परन्तु प्रचार में वे कहीं पीछे ही रहे।

भारत के परिवर्तन और परिवर्तन क्रांति के सत्य की गहराई और सच्चाई
जानने के लिए अवश्य पढ़ें
परिवर्तन
(परिवर्तन आता नहीं - लाया जाता है।)
लेखक विनय आर्य
महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
पुस्तक खरीदने के लिए कोड स्कैन करें

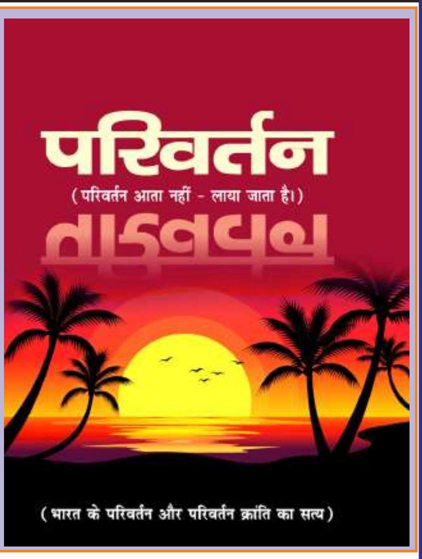

समय कभी-कभी अपने आप अवसर प्रदान करता है। उस महान् ऋषिवर की 200वीं जयन्ती शायद ऐसा ही अवसर है। आने वाला समय हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, समय के साथ-साथ चुनौतियां भी। अत: उनका सामना हम बेहतर तरीके से कर सकें, इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ समय अपने अतीत में जाएं और विचारपूर्वक सोचें कि आने वाले समय की चुनौतियां, क्या 150 वर्ष पूर्व की चुनौतियों से ज्यादा हैं, तो हमें उत्तर मिलेगा, शायद नहीं, ऋषि दयानन्द जी के जीवन/ कार्यों और दर्शन को समझने से पूर्व हमें इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। प्रस्तुत पुस्तक में इन सारे विषयों पर हम पांच चरणों में विचार करेंगे-

सृष्टि के आरम्भ से

पहला-आदि सृष्टि (सृष्टि के आरम्भ से) महाभारत के युद्ध से पूर्व का गौरवकाल (5000 वर्ष पूर्व तक)

दूसरा- महाभारत के युद्ध से कुछ समय पूर्व बनी परिस्थितियां एवं महा भारत के युद्ध के परिणाम।

तीसरा- महाभारत के पश्चात् से 18वीं और 19वीं सदी तक का भारत।

चौथा- महर्षि दयानन्द जी के समय की परिस्थितियां और उनके द्वारा किया गया परिवर्तनकारी कार्य।

पांचवां- वर्तमान युग की उन चुनौतियों/समस्याओं की चर्चा और समाधान के तत्व जो हमारे मूल अस्तित्व को पूरी तरह समाप्त करने को तैयार हैं।

पुस्तक के अन्त में विशेष परिशिष्ट भी दिए गए हैं, जो विषय के विस्तार में सहायक होंगे। (1) महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज का विश्व में फैला वर्तमान संगठन और सेवा कार्य।

(2) महर्षि दयानन्द के शिष्यों की श्रृंखला का संक्षिप्त परिचय।

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर विशेष

शिक्षक जगत के लिए अनुकरणीय गुरु शिष्य की महान परम्परा के आदर्श

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं गुरु विरजानन्द दण्डी जी को शत-शत नमन

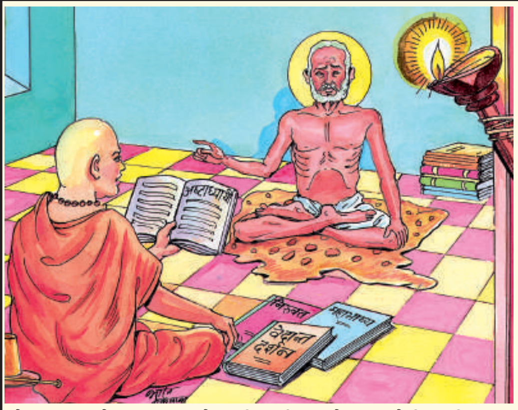

भारत गुरु ज्ञानियों का देश है। यहां समय-समय पर हमारे महापुरुषों ने अपने गुरुजनों के चरणों में बैठकर तप, त्याग और समर्पण के साथ शिक्षा प्राप्त करके अपने निजी जीवन, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व धरा को गरिमा प्रदान की है। योग दर्शन में ईश्वर को गुरुओं का भी गुरु बताया है। माता पिता और आचार्य को भी गुरु माना गया है। वस्तुत: गुरु शब्द का अर्थ है, अंधेरे से प्रकाश की ओर अग्रसर करने वाला। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और उनके भाइयों ने महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र जी से वेदादि शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त कर अधर्म, अन्याय, अनीति, अत्याचार को समाप्त किया, योगीराज श्री कृष्ण ने महर्षि संदीपनी के चरणों में बैठकर विद्या अर्जन कर समाज को धर्म की राह पर चलना सिखाया, गुरु शिष्य परंपरा की यह श्रृंखला बहुत विस्तृत है, इस क्रम में महर्षि दयानंद सरस्वती ने प्रज्ञा चक्षु गुरु विरजानंद के सान्निध्य में शिक्षा प्राप्त कर भारत में छाए हुए अज्ञान अविद्या के अंधेरे को तिरोहित किया और दोनों आदर्श गुरु शिष्यों के सम्मिलन से आर्य समाज जैसी महान संस्था का उदय हुआ, जिसने लगभग 150 वर्षों के इतिहास में भारत देश की आजादी से लेकर, जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव से भारत को मुक्ति दिलाने का ऐतिहासिक कार्य किया, नारी शिक्षा का प्रारंभ, बालविवाह पर प्रतिबंध और विधवाओं को विवाह करने का अधिकार दिलाया, समाज में फैले ढोंग पाखंड, अंधविश्वास को दूर हटाकर वैदिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी आर्य समाज की ही देन है। यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना की आदर्श परंपरा को पुन: स्थापित करने वाले आर्य समाज की इन समस्त उपलब्धियों का श्रेय जहां इसके संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी को समर्पित है, वहीं उनके गुरु प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरंजानंद जी का तपोबल भी स्तुत्य है। महर्षि की प्रेरणा से शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, महाविद्यालय, विश्व विद्यालय, डी.ए.वी शिक्षण संस्थान और अनेक अन्य शिक्षण केंद्र स्थापित कर नए आदर्श मानक सिद्ध किए हैं।

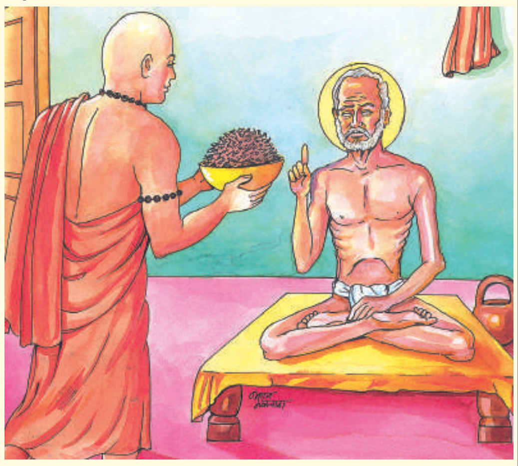

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष की समस्त शिक्षक जगत को आर्य समाज की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

गुरु - शिष्य की भेंट - सन् 1860 ईस्वी में 35 वर्ष की अवस्था में महर्षि दयानंद सरस्वती स्वामी विरजानंद जी की तपस्थली मथुरा पहुंचे। इससे पूर्व 21 वर्ष की युवा अवस्था में आपने प्रेम प्यार और सुख सुविधाओं से सुसंपन्न घर का त्याग किया था। इस बीच के 15 वर्ष के काल खंड में महर्षि नगर नगर, जंगल , जंगल, पर्वत, पर्वत आदि अनेकानेक स्थानों पर सच्चे शिव और कल्याणकारी गुरु की तलाश में भ्रमण करते रहे। जब वे गुरु विरजानंद दंडी जी के द्वार पर पहुंचे और उनकी कुटिया की कुंडी खटखटाई तब गुरु ने पूछा कौन हो? महर्षि दयानंद ने उत्तर में कहा कि यही तो जानने आया हूं कि मैं कौन हूं? यह स्वामी विरजानंद के प्रश्न का उत्तर तो नहीं था, बल्कि गुरु के प्रश्न पर शिष्य के प्रश्न का प्रहार ही था। किंतु गुरु ने तो सरल प्रश्न ही किया था, इस पर इतना कठिन प्रश्न करने वाला कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं होगा? गुरु विरजानंद जी समझ गये थे कि यह शिष्य असाधारण और महान जिज्ञासु है, गुरु विरजानंद जी का अंत:करण भी शायद प्रफुल्लित हो गया होगा, क्योंकि वे भी एक योग्य शिष्य की खोज में रहे होंगें, क्योंकि गुरु चाहे कितना भी बड़ा ज्ञान विज्ञान का सागर क्यों न हो अगर उसे सुपात्र और सुयोग्य शिष्य न मिले तो वह अपनी ज्ञान संपदा की धरोहर किसी को कैसे सौंपें? यहां महान गुरु और महान शिष्य का सम्मिलन हो रहा था, दोनों एक दूसरे की परीक्षा ले रहे थे। गुरु समझ गये कि द्वार पर सच्चा सुपात्र शिष्य आया है, गुरु विरजानंद जी ने अपनी कुटिया का द्वार खोल दिया, और मानिए कि भारत राष्ट्र के सौभाग्य का द्वार भी खुल गया।

गुरु की आज्ञा को सर्वोपरी माना - महर्षि ने स्वामी विरजानंद जी से शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रार्थना की। स्वामी विरजानंद जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी से संग्रहीत सारी पुस्तकों को यमुना में फेंकने का आदेश दिया, महर्षि ने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए अपनी समस्त पुस्तकों को बिना विचारे यमुना में प्रवाहित कर दिया। अगर इस विषय में विचार किया जाए तो किसी व्यक्ति को 35 वर्ष की अवस्था में गुरु के चरणों में बैठकर पढ़ने के लिए किसी ने आज्ञा नहीं दी थी, उनके भीतर प्रबल जिज्ञासा थी, संकल्प था और तीव्र प्यास थी। नहीं तो इस उम्र में किसी को गुरु चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्ति के लिए कहा जाए तो

वह यही कहेगा कि क्या इस आयु में भी पढ़ा जा सकता है और उस पर भी सबसे पहले गुरु यही आदेश करें कि अब तक का समस्त पुस्तक संग्रह नदी में फेंक दो, इसका अर्थ यही था कि अब तक जो शिक्षा प्राप्त की है उसे भूला दो, ऐसे में क्या शिष्य अपने गुरु की आज्ञा का पालन करेगा? आधुनिक परिवेश में तो 35 वर्ष की आयु वाला शिष्य गुरु की शरण में जाने वाला ही नहीं और चला भी गया तो अपनी संचित पुस्तकों को फेंकेगा भी नहीं। लेकिन एक महान गुरु के महान शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी की निष्ठा, विश्वास और संकल्प शक्ति अद्भुत और अनुपम थी। महर्षि ने गुरु विरजानंद जी की आज्ञा को सर्वोपरि माना है और संपूर्ण शिष्य समुदाय को यह प्रेरणा प्रदान की है कि गुणी, ज्ञानी और सदाचारी गुरु को तो मानिए लेकिन गुरु की उचित आज्ञा को भी सर्वोपरि मानिए, तभी शिष्य का उद्देश्य पूरा होता है।

तीन वर्ष की अल्प अवधि में पूर्ण हुई शिक्षा - सन् 1860 से 1863 तक केवल 3 वर्ष में महर्षि दयानंद ने गुरु विरजानंद जी की शिक्षा ग्रहण की। इन 3 वर्षों में गुरु विरजानंद जी से अष्टाध्याई , महाभाष्य, निरुक्त आदि संपूर्ण व्याकरण की शिक्षा ग्रहण कर ली थी। इससे पता चलता है कि महर्षि की पात्रता, मेधा और शिक्षा प्राप्ति की उत्कट इच्छा कितनी प्रबल थी। स्वामी विरजानंद जी एक बार पाठ पढ़ाने के बाद उसकी पुनरावृत्ति नहीं करते थे, एक दिन पाठ के विस्मृत होने के कारण महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने गुरु विरजानंद जी से पुन: पाठ पढ़ाने का अनुरोध किया, इस पर स्वामी विरजानंद जी ने दयानंद जी को डांटते हुए कहा था कि यमुना में डूबकर मर जाओ लेकिन दुबारा पाठ नहीं पढ़ाऊंगा। स्वामी जी यमुना के किनारे ध्यान में बैठकर चिंतन मनन करने लगे और लंबे समय तक ध्यान करने पर उन्हें अपना पाठ स्मरण हो आया, महर्षि गुरु विरजानंद जी के पास आए और कहने लगे कि गुरुवर मुझे आपके द्वारा पढाया गया पाठ स्मरण हो गया है, तभी विरजानंद जी ने पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाया।

इससे ज्ञात होता है कि शिष्य को सावधान होकर पढ़ना चाहिए और गुरु को पूरा सम्मान देना चाहिए, तभी शिक्षा फलीभूत होती है। आधुनिक परिवेश में तो गुरु और शिष्य वीडियो बना बनाकर पढ़ते-पढ़ाते हैं, तब भी उनकी साधना सफल नहीं होती। क्योंकि सावधान होकर पढ़ने से सफलता मिलती है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की गुरुभक्ति, सेवा भावना और समर्पण अपने आपमें बड़ा महान था। महर्षि अपने गुरु के स्नान के लिए यमुना जल लेकर आते थे, उनकी कुटिया की साफ सफाई करना और उनके हर सेवा कार्य को पूरी निष्ठा के साथ करना यह उनका दैनिक कर्तव्य था। जिसे उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ निभाया। एक बार महर्षि दयानंद सरस्वती जी गुरु कुटिया में झाड़ू लगा रहे थे, कि तभी स्वामी विरजानंद जी स्नान करके आ गये और उनका पैर कूड़े पर पड़ गया। स्वामी विरजानंद जी को महर्षि दयानंद जी पर इतना क्रोध आया कि उन्होंने महर्षि की डंडे से प्रताड़ना की। इस पर महर्षि दयानंद सरस्वती शांत सहज भाव से गुरु द्वारा दिए गए दंड को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करते रहे और बाद में गुरु चरणों को पकड़ कर कहने लगे कि हे गुरुवर, मेरा शरीर तो कठोर है लेकिन आपके हाथ तो कोमल हैं, कही मुझे दंड देते हुए, आपके हाथों में चोट तो नहीं लग गई ।

आधुनिक परिवेश में देखा जाए तो गुरु ही क्या माता पिता भी बच्चों को, शिष्य को प्रताड़ित करने के अधिकारी नहीं हैं और अगर कोई कर भी देता है, तो उसको उसका स्वयं दंड भुगतना पड़ता है। लेकिन महर्षि दयानंद की गुरु चरणों के प्रति श्रद्धा निष्ठा अद्भुत थी और उन्होंने मानव समाज को संदेश दिया कि अगर गुरु से शिक्षा प्राप्त करनी है तो विनम्र होना पड़ेगा, अपने भीतर पात्रता विकसित करनी होगी, तभी तुम सच्चे शिष्य बनकर कल्याण की राह पर आगे बढ़ सकते हो।

गुरु एवं शिष्यों को संदेश - गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5 सितंबर 2024 का शिक्षक दिवस हमारे सामने है। आज के समय में स्कूल और कॉलेजों में जो गुरु और शिष्य के आदर्शों की गरिमा समाप्त होती जा रही है। गुरु के नाम पर अध्यापक वर्ग ने शिक्षा का व्यापार शुरू कर दिया है और शिष्य समाज अपने हिसाब से केवल जीविका उपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षा का अर्थ केवल यही नहीं होता कि हम केवल अपने लिए और अपनों के लिए खाना कमाना सीखें, शिक्षा तो व्यक्ति, परिवार, समाज देश और दुनिया में आदर्श स्थापित करने की शक्ति होती है। राष्ट्र और मानव सेवा की भावनाओं का निर्माण ही शिक्षा का सच्चा अभिप्राय तथा अभिन्न अंग है। इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद जी ने जो गुरु शिष्य परंपरा के आदर्श प्रस्तुत किए हैं वे युग-युगांतरों तक मानव समाज को सुदिशा प्रदान करते रहेंगे।

गुरु दक्षिणा आदर्श - हमारी प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में गुरु दक्षिणा की महान परंपरा और अपार गरिमा थी। महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपने गुरु विरजानंद जी से शिक्षा प्राप्त कर जब गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु को प्रिय भेंट लौंग समर्पित करने लगे तब गुरु विरजानंद

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

दिल्ली-दरबार में और पंजाब की ओर

गतांक से आगे-

परन्तु ब्राह्मण पीछे से रोकते रहते थे। वे बहकाने और महर्षि जी को नास्तिक बतलाकर दर्शनजन्य पाप के चित्र खींचने में लगे रहते थे। इन्दौर-नरेश ने यत्न किया था कि एक सभा में सब नरेश इकट्ठा हों और महर्षि जी के सिद्धान्तों का श्रवण करें। दिल्ली में राजा लोग सरकारी प्रोग्राम से ही छुट्टी नहीं पा सकते थे, उन्हें ध र्मोपदेश सुनने की फुर्सत कहां? कभी लाट साहब की हाजिरी, कभी फौज का निरीक्षण, कभी जुलूस, कभी थियेटर- इनसे फुर्सत पाना ही कठिन होता था। अत: राजाओं का जमाव न हो सका। महर्षि जी का विचार था कि देश के रईसों का कुछ सुधार कर सकें; कम-से-कम उनके कानों तक धर्म की ध्वनि पहुंचा दें, परन्तु कुछ देश का दुर्भाग्य और कुछ रईसों का कर्म फल-विचार फलीभूत न हो सका।

दरबार के अवसर पर पहुंचने में महर्षि जी का दूसरा लक्ष्य यह था कि देश के भिन्न-भिन्न धर्मिक नेताओं को इकट्ठा करके परामर्श किया जाय और यदि सम्भव हो तो कोई ऐसा महानद ढूंढ लिया जाय, जिसमें सब सम्प्रदायरूपी नाले मिला दिए जायें। सब सुधारक एक ही प्रकार से, एक ही स्वर से एकता का यत्न करें, ताकि जो लोग प्रजा का सुधार कर रहे हैं वे आपस में मतभेद के कारण झगड़ते हुए दृष्टिगोचर न हों। महर्षि जी के निमंत्रण पर बाबू केशवचन्द्र सेन, सर सय्यद अहमद खां, मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी, बाबू नवीनचन्द्र राय, मुन्शी इन्द्रमणि और बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि आदि महानुभाव महर्षि जी के स्थान पर एकत्र हुए। बाबू केशवचन्द्र सेन उस समय ब्राह्मसमाज के चमकते सितारे थे। नवविधान अभी विख्यात नहीं हुआ था, परन्तु समाज की बागडोर उन्हीं के हाथों में थी । ब्राह्मोसमाज के दूसरे प्रतिनिधि बाबू नवीनचन्द्र राय थे। राय महाशय पंजाब के ब्राह्मोसमाज के प्राण थे। 19वीं सदी में इस्लाम ने सर सय्यद की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली नेता उत्पन्न नहीं किया। सर सय्यद का बल तलवार का नहीं था। लेखनी का था, जिह्वा का था और बुद्धि का था। भारत के मुसलमानों को आपने नींद से उठाकर खड़ा कर दिया था। मुन्शी कन्हैयालाल अलखध ारी सुधार का यत्न कर रहे थे और मुन्शी इन्द्रमणि मुसलमानों द्वारा हिन्दू धर्म पर किये हुए आक्षेपों का समाधान करके ख्याति पा रहे थे। बाबू हरिश्चन्द्र चिंतामणि उस समय बम्बई के प्रसिद्ध आर्यसमाजी थे। इस प्रकार वह छोटी-सी सभा प्रतिनिधि स्वरूप समझी जा सकती थी। इसमें बंगाल, बम्बई, संयुक्त प्रान्त और पंजाब के तथा दूसरी तरफ इस्लाम, ब्राह्मोसमाज, हिन्दू समाज और आर्यसमाज के प्रतिनिधि विद्यमान थे। सभा में महर्षि जी ने अपना विचार उपस्थित किया। विचार का सार यह था कि देश का अभ्युदय और मनुष्य का कल्याण तब तक नहीं हो सकता, जब तक देशभर का एक धर्म न हो जाय। वह एक धर्म वैदिक धर्म है। यदि उस पर कोई आक्षेप या शंका हो तो महर्षि जी ने उसके समाधान के लिए अवसर देने की इच्छा प्रकट की। दु:ख है कि इस सभा की पूरी कार्रवाई कहीं भी प्राप्त नहीं होती। यह सभा गुप्त ही समझी गई होगी, क्योंकि उस समय के समाचार पत्रों में भी इसका कोई विस्तृत वर्णन नहीं पाया जाता। प्रतीत होता है कि सभा का जहाज वेद की निर्दोषता पर आकर टकराया। ब्राह्मोसमाजी और मुसलमान वेद की ईश्वरीयता और निर्दोषता को नहीं मान सके, इस कारण सभा विशेष परिणाम उत्पन्न किये बिना ही समाप्त हो गई। सभा के सन्मुख मुख्य कठिनाई वेद-सम्बन्धी थी यह अनुमान एक और घटना से भी पुष्ट होता है। बाबू केशवचन्द्र सेन ने दिल्ली में महर्षि जी से यह भी कहा था कि यदि आप वेद के नाम से धर्मप्रचार करने की जगह यह कहा करें

कि मैं कहता हूं कि यह धर्म है तो लोग अधिक सुगमता से विश्वास कर लें और आपको अधिक सफलता हो। महर्षि जी ने इसका जो उत्तर दिया होगा, उसकी कल्पना ही की जा सकती है। एक मुसलमान और फिर कट्टर मुसलमान यह मान ले कि वेद ईश्वर की ओर से आए हैं और निर्दोष हैं- यह कैसे सम्भव था?

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

In Delhi-Durbar and towards Punjab

The essence of the idea was that the progress of the country and the welfare of humanity cannot take place until there is one religion for the whole country. That one religion is Vedic religion. If there is any objection or doubt about that, Maharishiji expressed his desire to give an opportunity to solve it. It is a pity that the complete proceedings of this assembly are not available anywhere. This meeting must have been considered secret, because no detailed description of it is found even in the newspapers of that time. It seems that the assembly's ship came and collided on the innocence of Vedas. Brahmo Samaj and Muslims could not accept the divinity and innocence of the Vedas is why the special meeting ended without producing any result.

The main difficulty faced by the assembly was related to the Vedas. This assumption is also confirmed by another incident. Babu Keshavchandra Sen had also told Maharishiji in Delhi, ''if instead of propagating religion in the name of Vedas, you say that ' you say this is dharam, then people will believe more easily and you will have more success. The answer Maharishiji would have given to this can only be imagined. A Muslim and than a fanatic Muslim should believe that the Vedas have come from God and are innocent - how was this possible? It is not difficult to understand why the meeting which was held with the aim of seeking the help of Babu Keshabchandra Sen or Sir Syed Ahmed in an attempt to unify religion on the basis of the Vedas failed.

At the end of the court, Maharishi ji left Delhi. He went to Saharanpur via Meerut. There Maharishi ji got information that there is a huge religious fair in Chandpur (Distt. Shahjahanpur), in which Christian and Muslim scholars will also psrticipate and decide which religion is true. As soon as the invitation of the founders of the fair reached, Maharishiji accepted it.

The fair was to be held from 18 March 1877 to 20 March 1877. Maharishi ji reached Chandpur 5 days before the fair. On 18 and 19 March, representatives of Muslims and Christians, big clerics and priests also arrived. The name of this fair was Anandswaroop Mela, and the purpose was the decision of Dharmadharma. Fed up with the attacks of the Christian priests, many nobles here had organized this fair, so that the truth and falsehood could be decided only once. Before the religion-discussion started, many people came to Maharishiji and requested that it would be better if Muslims and Hindus together humiliate Christians. Maharishi ji did not know the tricks of politics and reconciliation in religion and truth. His answer was clear. He said- It seems appropriate that no one should favour anyone, but in my understanding it is a good thing that we and Maulvi Sahib and Padri Sahib should decide the truth together with love. It is not right to oppose anyone. In this fair, where people of other sects were trying to humiliate the opponent in some way, Maharishiji' had great desire that everyone should understand the true religion.

Scripture discussion continued for two days. On behalf of the Muslims, the famous Maulvi Muhammad Qasim of the Madrasa of Deoband and Maulvi Syed Abdul Mansoor of Dehli, Pastor Scott, Pastor Naval, Pastor Pakar from the Christian side, Maharishi Dayanand and Munshi Indra Mani from the Aryan men were there. Kabirpanthi people were the directors of this fair. This fair was of a unique kind. The idea was also good. At first it appeared that the focus of the discussion would be on Christian priests. It was understood that the poor Hindu religion could not get any attention? But as soon as Maharishiji's one square move, the bowels of the people turned away. Everyone understood that this sannyasi would be the main mall of this arena. Maharishiji's speeches beautified with evidence and jokes had a good effect on everyone. The priests and clerics got a warning in that fair that Aryadharma is a living substance, not a dead one.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login www.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

क्या कानून की आड़ ...

किसी खाली पड़ी जमीन पर, अगर वहां कुछ दिन बेरोक-टोक नमाज पढ़ ली, तो फिर वक्फ उस जमीन पर भी अपने कब्जे का दावा ठोक देगा। यही कारण है कि कुतुब मीनार, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन है, लेकिन मुसलमान इस पर कब्जा करने के लिए वहां नमाज पढ़ने लगे हैं।

विडम्बना देखिए, अगर किसी को वक्फ बोर्ड के फैसले से ऐतराज है, तो वह अपनी संपत्ति से जुड़े विवाद को निपटाने के लिए वक्फ ट्रिब्यूनल में जा सकता है। इस कानून की एक खास बात यह भी है कि जमीन या संपत्ति पर आखिरी फैसला वक्फ ट्रिब्यूनल में ही होता है। इस कानून के सेक्शन 85 के मुताबिक, वक्फ ट्रिब्यूनल के फैसले को सिविल, राजस्व या अन्य अदालतों में चुनौती नहीं दी जा सकती है।

असल में होना तो यह चाहिए कि वक्फ बोर्ड ही समाप्त कर देना चाहिए, लेकिन सरकार इसमें जो संशोधन लेकर आ रही है, अगर कानूनी संशोधनों को संसद से मंजूरी मिल गई , तो संपत्ति विवाद से जुड़े 40 हजार से ज्यादा वर्तमान मामलों का सिविल कोर्ट में निपटारा हो सकता है। सोचिए, 40 हजार मामले कोर्ट में वक्फ के खिलाफ जाएंगे, तो वक्फ जमीन कब्जा किए बैठा है। वे वक्फ के खिलाफ हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में अपील कर सकेंगे। अब सुनिए, सरकार ने इसमें क्या-क्या संशोधन किए हैं। एक तो यह कि वक्फ बोर्ड और वक्फ काउंसिल का सारा अधिकार केंद्र सरकार अपने कब्जे में लेकर जिला कलेक्टर को दे देगी। इस विधेयक के अनुसार, कलेक्टर वक्फ बोर्ड के चेयरमैन से भी सुपीरियर होगा।

दूसरा, अगर यह विधेयक पास हो गया तो वक्फ की जिन संपत्तियों पर अतिक्रमण है, उन्हें खाली कराना असंभव हो जाएगा। इसमें कहा गया है कि सरकारी भवन अगर वक्फ संपत्ति पर हैं, तो उन्हें नहीं हटाया जा सकता है। दूसरा, केंद्रीय वक्फ परिषद और राज्यों के वक्फ बोर्ड में दो गैर-मुसलमान प्रतिनिधि होंगे। साथ ही, बोहरा और आग़ाख़ानी समुदायों के लिए अलग वक्फ बोर्ड बनेगा।

इसके अतिरिक्त, वक्फ का पंजीकरण सेंट्रल पोर्टल पर, मुतवल्ली यानी संपत्ति के रक्षक को देनी होगी। ख़ातों की जानकारी संपत्ति वक्फ की है या नहीं, यह फ़ैसला अब वक्फ बोर्ड नहीं करेगा। वक्फ ट्राइब्यूनल में तीन के बजाय अब दो सदस्य होंगे। ट्राइब्यूनल के फ़ैसले को 90 दिन के भीतर हाई कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है, और अगर को 12 साल से वक्फ की ज़मीन पर कब्ज़ा करके बैठा है, तो उसका मालिक कब्जाधारी होगा, ना कि वक्फ बोर्ड।

अब इसमें जो नया मामला सुनने में आया है, वह है कि ऑल इंडिया सज्जदानशीन एसोसिएशन के अध्यक्ष अजमेर के सैयद नसीरुद्दीन चिश्ती सरकार से अलग से दरगाह बोर्ड बनाने की परमिशन मांग रहे हैं। अगर यह परमिशन मिली, तो देश में दरगाहों का जाल तो नहीं बिछ जाएगा? -संपादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

यहां पर प्राच्य और आधुनिक विद्या प्रदान करने वाला एक भव्य गुरुकुल भी प्रारंभ हो चुका है, इस वैदिक विद्या केंद्र का शिलान्यास 2 वर्ष पूर्व 19 जुलाई 2022 को हुआ था। इस केंद्र में वैदिक विद्वानों, प्रचारकों, पुरोहितों एवं कार्यकर्ताओं के निर्माण हेतु कार्यशालाओं तथा शिविरों का आयोजन निरंतर चलेगा। उच्च कोटि के विद्वान यहां आकर प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे और इस केंद्र से निष्णात होकर आत्मनिर्भर प्रचारक बनकर संपूर्ण विश्व में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार को गति देंगे।

आर्य समाज फाऊंडेशन चेन्नई द्वारा इस वैदिक विद्या केंद्र का लोकार्पण 15 सितंबर 2024 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत संचालित ज्ञान ज्योति पर्व के 2 वर्षीय कार्ययोजना की श्रंखला में होना सुनिश्चित है। केंद्र के उद्घाटन में आप सभी सादर आमंत्रित हैं। यह कार्यक्रम लगातार एक वर्ष तक चलेगा जिसमें आप अपने इष्ट मित्रों सहित परिवार सादर आमंत्रित हैं। वर्षावधि में यहां होने वाले आयोजनों का निमंत्रण पत्र आपको आर्यसन्देश एवं सोशल मीडिया के माध्यम अवश्य प्राप्त होगा।

- सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पृष्ठ 3 का शेष

आइये! विचारें-कैसे होगा.....

इस प्रकार है-'मिस्टर लूईकूने' के माता-पिता की मृत्यु ऐलोपैथिक डॉक्टरों की चिकित्सा दौरान हुई थी।

वे स्वयं भी 20 वर्ष की छोटी-सी आयु में सिर और फेफड़ों के भयानक रोगों से पीड़ित रहने लगे थे, पेट में फोड़ा हो गया। अवस्था इतनी खराब हो गई थी कि उन्हें जीवन की आशा नहीं रही। डॉक्टरों ने रोग को असाध्य कहकर चिकित्सा से इनकार कर दिया। उसी स्थिति में मौत की प्रतीक्षा करने लगे।

मेलजर (Meltzer) थियोडन हैन (Theodon Honni) रस आदि प्रसिद्धि पा रहे थे। लूईकूने उनके आश्रम में चले गए और अपनी चिकित्सा आरम्भ कर दी। इस प्रकार अपनी बुद्धि के तेज प्रभाव के कारण चिकित्सकों के बताए हुए साधनों से रोग मुक्त होकर 1833 ई. में उन्होंने अपना प्राकृतिक चिकित्सालय खोल दिया। कूने का सिद्धान्त है कि सब रोगों की जड़ शरीर में विकार है। जो कि आन्तरिक सफाई से ठीक हो सकता है। **यही चिकित्सा आज सम्पूर्ण विश्व में 'जलचिकित्सा' पानी का ईलाज, टब बाथ का स्नान इत्यादि नामों से प्रसिद्ध है।** जो प्राकृतिक चिकित्सा का एक विशेष अंग है। देश में प्राकृतिक चिकित्सा का आरम्भ तीव्र बुद्धि यद्यपि अक्षर ज्ञान रहित लोगों से हुआ, परन्तु आगे चलकर समय की बढ़ती मांग और उसको अपनाने वाले बड़े-बड़े वैज्ञानिक और डॉक्टरी की उच्चडिग्री प्राप्त चिकित्सक हुए हैं-

-जर्मन के प्रसिद्ध ऐलोपैथिक डॉक्टर हैनरिक लहमन (Henrkk Lahmann) को ऐलोपैथी से सन्तोष न हुआ और उन्होंने विषैली औषधि का सहारा छोड़कर प्राकृतिक जीवन, वैज्ञानिक, भोजन और स्वास्थ्यवर्धक कपड़े पहनने पर विशेष बल दिया।

-जर्मन के प्रोफेसर सर अरनाल्ड एहरेट (Sir Arnold Ehrat) ने अमरीका में प्राकृतिक चिकित्सा का प्रसार किया और उन्होंने फलाहार तथा उपवास पर अधिक बल दिया है।

-अमरीका के डॉक्टर हैनरी लिंडल्हार एम.डी. (Henry Lindlhar M.D.) ने भी प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार किया पहले वे भी एलोपैथिक डॉक्टर थे, बाद में प्राकृतिक चिकित्सा के अनुयायी बने। उनका मत था कि यदि नया रोग औषधि अथवा इंजेक्शन से दबा दिया गया और विकार नहीं निकला तो फिर वही जीर्ण के रूप में प्रकट होता है।

-प्रोफेसर आर्टल (Ortal) ने जल पीकर सब रोगों की विधि पर बड़ा आन्दोलन किया जिससे जल के आरोग्यवर्धक गुणों पर वहां की जनता का विश्वास बढ़ने लगा।

-लिच फील्ड (Lich Field) के डॉक्टर सरजान फ्लोअर (Sir Jonn floyer) को जब पता चला कि नगर के पास ही किसी झरने के पानी में स्नान करके कुछ लोगों ने स्वास्थ्य लाभ किया है, तब उन्होंने भली प्रकार जांच की। परीक्षण से सत्य सिद्ध होने पर जल चिकित्सा के भक्त बन गए। हमारे देश भारत के जबलपुर निवासी स्व. रायबहादुर, युगपुरुष महात्मा गांधी, मोरारजी देसाई इत्यादि महानुभाव हुए हैं। जिन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा की प्रशंसा की है और वे इसके प्रबल समर्थक भी थे।

आज जो देश विज्ञान के ऊंचे शिखर पर उन्नत हुए हैं। वहां प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार प्रतिदिन बढ़ रहा है। इस चिकित्सा पद्धति का आविष्कार और प्रचार धीरे-धीरे इसलिए हुआ क्योंकि वेद का ज्ञान सब लोग प्राप्त नहीं कर सके। वेद में इस चिकित्सा का पूर्ण भंडार है। यदि वे वेद पढ़े होते तो परम्परा से ही जल चिकित्सा- पद्धति से सुपरिचित होते।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 5 का शेष

शिक्षक जगत के लिए अनुकरणीय गुरु...

ने अपने प्रिय शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती को कहा कि मुझे गुरु दक्षिणा देना ही चाहते हो तो जो आज भारत में अज्ञान, अविद्या का अंधेरा छाया हुआ है, चारों तरफ ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास का बसेरा है, अगर आप दक्षिणा देना ही चाहते हो तो दीन दुखी मानवजाति की इस पीड़ा को दूर करो, वेदों के ज्ञान से नए सवेरे का उदय करो, मानव समाज में जो भय, भ्रम व्याप्त है, पूरा मानव समाज दुःख पीड़ा और संतापों से त्रस्त है, सबको जीने की राह दिखाओ। देश और धर्म के लिए अपना पूरा जीवन नौछावर कर दो, महर्षि दयानंद सरस्वती ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए अपना पूरा जीवन वैदिक, धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए समर्पित कर दिया। स्वयं ने जहर पीकर वे समाज को अमृत पिला गये।

महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद को शत शत नमन - आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानंद ने एक नये गौरवशाली युग का आरंभ किया। ऐसे गुरु शिष्य की आदर्श परंपरा को शत शत नमन करने का शुभ अवसर ही शिक्षा दिवस है, शिक्षा दिवस पर भारत के विद्यार्थियों को गुरु विरजानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के आदर्श जीवन को पढ़ने का संकल्प लेना चाहिए और अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहिए। *- आचार्य अनिल शास्त्री*

शोक समाचार

श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं उत्तर पश्चिम वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य जी का दिनांक 4 सितम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ नोएडा में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 16 सितम्बर, 2024 को आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 2 सितम्बर, 2024 से रविवार 8 सितम्बर, 2024
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 5-6-7/09/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4, सितम्बर, 2024

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह